

संसार की दौड़— कैसे मुक्त हों?

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहाते ॥

हे महाबाहो, निःसंदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है, परंतु हे कुंतीपुत्र अर्जुन, अभ्यास अर्थात् स्थिति के लिए बारंबार यत्न करने से और वैराग्य से वश में होता है ।

कृष्ण ने अर्जुन की मनोदशा को देखकर कहा, निश्चय ही अर्जुन, मन बड़ी मुश्किल से वश में होने वाला है। यह जो कहा, निश्चय ही, यह मनुष्य के मन की स्थिति के लिए कहा है। निश्चय ही, जैसा मनुष्य है, ऐज़ वी आर, जैसे हम हैं; हमें देखकर, निश्चय ही मन बड़ी मुश्किल से वश में होने वाला है। जैसा आदमी है, अगर हम उसे वैसा ही स्वीकार करें, तो शायद मन वश में होने वाला ही नहीं है।

लेकिन—और उस लेकिन में गीता का सारा सार छिपा है—लेकिन अर्जुन, अभ्यास और वैराग्य से मन वश में हो जाता है।

जैसा मनुष्य है, अगर हम उसे अनछुआ, वैसा ही रहने दें, और चाहें कि मन वश में हो जाए, तो मन वश में नहीं होता है। क्योंकि जैसा

मनुष्य है, वह सिर्फ मन ही है। मन के पास उसमें कुछ भी नहीं है। मन के पार उसका कोई भी अनुभव नहीं है। मन को वश में करने की कोई भी कीमिया, कोई भी तरकीब उसके हाथ में नहीं है। लेकिन—और लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है; और ये दो शब्द, अभ्यास और वैराग्य गीता के प्राण हैं—लेकिन अभ्यास और वैराग्य से मन वश में हो जाता है। अभ्यास और वैराग्य का आधार आपको समझा दूं, फिर हम अभ्यास और वैराग्य को समझेंगे।

अभ्यास और वैराग्य का पहला आधार तो यह है कि मनुष्य जैसा है, उससे अन्यथा हो सकता है।

मन की बात ही नहीं कर रहे वे। वे कह रहे हैं, मन को छोड़ो। तुम जैसे हो, ऐसे में मन वश में

नहीं होगा। पहले हम तुम्हें ही थोड़ा बदल लें। पहले हम तुम्हें ही थोड़ा बदल लें, फिर मन वश में हो जाएगा। अभ्यास और वैराग्य इस बात की घोषणा है कि मनुष्य जैसा है, उससे अन्यथा भी हो सकता है। मनुष्य जैसा है, उससे भिन्न भी हो सकता है। मनुष्य जैसा है, वैसा होना एकमात्र विकल्प नहीं है, और विकल्प भी हैं। हम जैसे हैं, यह हमारी एकमात्र स्थिति नहीं है, और स्थितियां भी हमारी हो सकती हैं।

अगर हम एक बच्चे को जंगल में छोड़ दें पैदा होते ही तब, तो क्या आप सोचते हैं, वह बच्चा कभी भी मनुष्य की कोई भी भाषा बोल पाएगा। कोई भाषा नहीं बोल पाएगा। ऐसा नहीं कि वह आपके घर में पैदा हुआ था, तो गुजराती बोलेगा जंगल में! कि हिंदुस्तान की जमीन पर पैदा हुआ था, तो हिंदी बोलेगा। कि अंग्रेज के घर में पैदा हुआ था, तो अंग्रेजी बोलेगा। नहीं, वह कोई भाषा नहीं बोलेगा। शायद आप सोचते होंगे, वह कोई नई भाषा बोलेगा। वह नई भाषा भी नहीं बोलेगा। वह भाषा ही नहीं बोलेगा।

उन्नीस सौ बीस में बंगाल में दो बच्चियां पकड़ी गईं, जिनको भेड़िए उठाकर ले गए थे और

उन्होंने उनको बड़ा कर लिया। भेड़िए शौकीन हैं। और कई दफे दुनिया में कई जगह उन्होंने यह काम किया है। बच्चों को उठा ले जाते हैं, फिर उनको पाल लेते हैं। एक बच्ची ग्यारह साल की थी और एक तेरह साल की थी, जब वे पकड़ी गईं। और पहली दफा हैरानी हुई, वे कोई भाषा नहीं बोलती थीं। भाषा की तो बात दूसरी है, वे दो पैर से खड़ी भी नहीं हो सकती थीं। वे चारों हाथ-पैर से ही चलती थीं।

अभी कुछ दिन पहले, पांच-सात वर्ष पहले यू.पी. में एक बच्चा पकड़ा गया जंगल में, वह भी भेड़ियों ने पाल लिया था। वह कोई चौदह साल का था, वह भी कोई भाषा नहीं बोल सकता था। उसका नाम रख लिया था राम, पकड़ने के बाद। छः महीने कोशिश करके बामुशिकल उससे राम निकलवाया जा सका कि वह राम कह सके। लेकिन छः महीने में वह मर गया। और चिकित्सक कहते हैं कि वह राम कहलवाने की कोशिश ही उसकी जान लेने वाली सिद्ध हुई।

चौदह साल का बच्चा एक शब्द नहीं बोलता था। क्या हुआ? चारों हाथ-पैर से चलता था। छः महीने मसाज कर-करके उसको बामुशिकल खड़ा कर पाए। नहीं तो रीढ़ उसकी सीधी नहीं होती थी, फिवसड हो गई थी। चार हाथ-पैर से वह भेड़ियों की तेजी से दौड़ता था! लेकिन खड़ा करके वह ऐसा चलता था कि रत्ती-रत्ती मुशिकल हो गया। क्या हो गया?

आदमी वही हो जाता है, जिस आयाम में उसका अभ्यास करवा दिया जाता है, वहीं हो जाता है। वह भेड़िए के साथ रहा, भेड़िए का अभ्यास हो गया। अभ्यास कर लिया, वही हो गया।

आदमी एक अनंत संभावना है, इनफिनिट पासिबिलिटी। हम जो हो गए हैं, वह हमारी एक पासिबिलिटी है सिर्फ। वह हमारी एक संभावना है, जो हम हो गए हैं। अगर हम दुनिया की मनुष्य जातियों को भी देखें, तो हमको पता चलेगा कि अनंत संभावनाएं हैं।

ऐसे कबीले हैं आज भी, जो क्रोध करना नहीं चाहते हैं। आप हैरान होंगे! आप कहेंगे, क्रोध!

क्रोध तो हर मनुष्य करता है। आपको सब मनुष्यों का पता नहीं है।

ऐसे कबीले हैं आज भी आदिवासियों के, जो क्रोध करना नहीं जानते। क्योंकि क्रोध भी अभ्यास से आता है; अचानक नहीं आ जाता। बाप कर रहा है, मां कर रही है, घर भर क्रोध कर रहा है, और तख्ती भी लगी है कि क्रोध करना पाप है घर में। और सब चल रहा है। वह बच्चा सीख रहा है, वह कंडीशन हो रहा है। वह जवान होकर बच्चा कहेगा कि ऐसा हो ही कैसे सकता है कि आदमी क्रोध न करे! तो यह सिखावन है। बच्चा तो एक तरल चीज थी। आपने उसे एक दिशा में ढाल दिया। कठिनाई हो गई। वह अड़चन हो गई।

ऐसे कबीले हैं, जिनमें संपत्ति का कोई मोह नहीं है; कोई मोह नहीं है। संपत्ति का मोह ही नहीं है। अभी एक छोटे-से कबीले की खोज हुई, तो बड़े चकित हो गए लोग, उस कबीले में संपत्ति की मालकियत का खयाल ही नहीं है। किसी आदमी को यह खयाल नहीं है कि यह मेरी जमीन है। किसी को खयाल नहीं है कि यह मेरा मकान है।

आदमी एक अनंत संभावना है, इनफिनिट पासिबिलिटी। हम जो हो गए हैं, वह हमारी एक पासिबिलिटी है सिर्फ। वह हमारी एक संभावना है, जो हम हो गए हैं। अगर हम दुनिया की मनुष्य जातियों को भी देखें, तो हमको पता चलेगा कि अनंत संभावनाएं हैं।

लेकिन कबीले का पूरा ढंग और है कंडीशनिंग का। कोई अपना मकान नहीं बनाता, सारा गांव मिलकर उसका मकान बनाता है। जब भी गांव में एक नए मकान की जरूरत पड़ती है, पूरा गांव मिलकर एक मकान बनाता है। गांव में कोई नया आदमी रहने आ जाता है, तो पूरा गांव एक मकान बना देता है। वह आदमी उसमें रहने लगता है। पूरा गांव घर-घर से चीजें देकर उसके घर में जमा देता है। वह घर का उपयोग करने लगता है।

उस कबीले में खयाल ही नहीं है प्राइवेट ओनरशिप का, कि व्यक्तिगत संपत्ति भी कोई चीज होती है। आप उस कबीले में कम्युनिज्म न फैला सकेंगे। क्योंकि कम्युनिज्म पोलेरिटी है। व्यक्तिगत संपत्ति हो, तो कम्युनिज्म का खयाल पैदा हो सकता है; नहीं तो पैदा नहीं हो सकता। उस कबीले में आप किसी को नक्सलाइट नहीं बना सकते हैं। कोई उपाय नहीं है। उस कबीले में किसी को खयाल ही नहीं है कि वस्तु और व्यक्ति में कोई संबंध मालकियत का होता है।

और हम मरे जाते हैं अपरिग्रह का सिद्धांत दोहरा-दोहराकर। वह कुछ हल होता नहीं। अपरिग्रही से अपरिग्रही भी...अब दिगंबर जैन मुनि नग्न रहते हैं।

दो दिगंबर जैन मुनि शिखरजी के पास के वन में झगड़ पड़े। अब झगड़ा लोग कहते हैं कि या तो स्त्री के कारण होता है या धन के कारण। न उनके पास स्त्री है, न धन है, जहां तक जानकारी है। झगड़ा हो गया, तो जो पिच्छी वगैरह रखते हैं साथ में, उससे एक-दूसरे की खोपड़ी पर हमला बोल दिया! लोगों ने, गांव वालों ने आकर छुड़ाया। पुलिस भी आ गई। और तब बड़ी हैरानी हुई कि वह जो पिच्छी का डंडा था, उसमें सौ-सौ के नोट अंदर भरे हुए थे। उसी पर झगड़ा हो गया था। वह बंटवारे में झगड़ा हो गया था। गए थे शौच को जंगल में, लेकिन बंटवारे में झगड़ा हो गया!

पुलिस थाने लें गईं। आस-पास के गांव के जैनी हाथ-पैर जोड़कर उनको छुड़वाए, कि हमारी इज्जत का खयाल करो। कोई क्या कहेगा! दिगंबर मुनि हैं! चर्चा बंद करो। रिश्वत खिलाई मुनि को

छुड़ाने के लिए। बड़े आश्चर्य की बात है, एक आदमी नग्न खड़ा होने की हिम्मत जुटा पाया, तो पिच्छी में रूप के बंडल रखे हुए है! कंडीशनिंग है। कंडीशनिंग भारी है। मगर यह एक रूप ही है। यह अनिवार्य नहीं है। ऐसे रूप आदमी के हैं, जहां उनको पता भी नहीं है।

अब यहां हम सोचते हैं। जिस ढंग से हम सोचते हैं, वह एक विकल्प है। यह मैंने इसलिए उदाहरण के लिए आपको कहा कि अन्य विकल्प सदा हैं।

अभ्यास का मूल आधार यह है कि आप जैसे हैं, उससे अन्यथा हो सकते हैं। अभ्यास का अर्थ है, ऐसी विधि, जो आपको अन्यथा कर देगी। अब जैसे एक आदमी है, वह कहता है कि मेरे हाथ में बहुत तकलीफ है, आपरेशन करवाना है। आपरेशन आप करिएगा, तो मैं न करवा पाऊंगा, मैं हाथ को खींच लूंगा। इतनी तकलीफ होगी। हम कहते हैं, कोई फिक्र नहीं। हम तुम्हें अनस्थेसिया दे देंगे, पहले बेहोशी की दवा दे देंगे, फिर आपरेशन कर लेंगे। फिर तुम्हें तकलीफ न होगी।

अर्जुन कहता है, मन बड़ा चंचल है। कृष्ण कहते हैं, बिलकुल ठीक कहते हो। हम पहले अभ्यास करवा देंगे। फिर मन चंचल न रहेगा। हम पहले तुम्हें बदल देंगे। हम सारी स्थिति बदल देंगे।

अभ्यास का अर्थ है, सारी बाह्य और आंतरिक स्थिति की बदलाहट। अभ्यास का अर्थ है, वे जो संस्कार हैं, कंडीशनिंग है, वह जो हमारे भीतर पुराना जमा हुआ प्रवाह है, उसको जगह-जगह से तोड़कर नई दिशा दे देना।

और दूसरा शब्द कृष्ण उपयोग करते हैं, वैराग्य। उनका अर्थ तो मैं सांझ आपसे कहूंगा। अभी मैं सिर्फ मूल आधार आपको कह दूँ।

अभ्यास का अर्थ है, आप जैसे हैं, उससे अन्यथा करने की विधियां, मेथड्स। और आप जैसे हैं, वह भी किन्हीं विधियों के कारण हैं, अपने कारण नहीं। अगर आप गुजराती बोलते हैं, तो सिर्फ इसलिए कि गुजराती का अभ्यास करवा दिया गया है। और कोई कारण नहीं है। आप अंग्रेजी बोल सकेंगे, अगर अंग्रेजी का अभ्यास करवा दिया जा सके। कोई अड़चन नहीं है।



जो भी आप हैं, वह अभ्यास का फल है। लेकिन अभी जो अभ्यास करवाया है, वह समाज ने करवाया है। और समाज बीमारों का समूह है। अभी जो अभ्यास करवाया है, वह भीड़ ने करवाया है। और भीड़ मनुष्य की निम्नतम अवस्था है। इसलिए आप उस भीड़ के एक हिस्से हैं।

जो भी आप हैं, वह अभ्यास का फल है। लेकिन अभी जो अभ्यास करवाया है, वह समाज ने करवाया है। और समाज बीमारों का समूह है। अभी जो अभ्यास करवाया है, वह भीड़ ने करवाया है। और भीड़ मनुष्य की निम्नतम अवस्था है। इसलिए आप उस भीड़ के एक हिस्से हैं। अभी आप हैं नहीं। अभी आप जो भी हैं, वह

भीड़ का ही हिस्सा हैं। और भीड़ ने जो करवा दिया है, वह आप है।

अभ्यास का अर्थ है, व्यक्तिगत चेष्टा उस दिशा में, जहां आप नए हो सकें, जहां आप भिन्न हो सकें।

यह मन की धारा, जो बहुत चंचल दिखाई पड़ती है, वह चंचल इसीलिए है कि पूरी व्यवस्था उसे चंचल कर रही है।

हमारी हालत करीब-करीब ऐसी है कि मैंने सुना है, एक कुत्ते के मन में खयाल आ गया कि वह दिल्ली चला जाए। सारी दुनिया दिल्ली जा रही थी। उसने सोचा कि कुत्ते क्यों पीछे रह जाएं! और जब सभी दिल्ली पहुंच जाएंगे, तो कुत्तों के अधिकारों का क्या होगा? फिर वह कुत्ता कोई छोटा-मोटा कुत्ता भी नहीं था, एक एम.पी. का कुत्ता था। नेता का कुत्ता था। दिन-रात दिल्ली जाओ, दिल्ली आओ की बात सुनाई पड़ती थी। दिल्ली जाने की विधियां और उपाय और सीढ़ियां ईजाद किए जाते थे; आदमियों के कंधों पर कैसे चढ़ो, लोगों की आंखों में धूल कैसे झोंको, सब उसने सुन लिया था। यह ठीक ट्रेड हो गया था।

एक दिन उसने अपने गुरु को कहा—गुरु, मालिक जो उसका एम.पी. था—कहा कि अब बहुत देर हुई जा रही है। अब मुझे आशीर्वाद दें, मैं भी दिल्ली जाऊं! उसने कहा कि तू क्या करेगा दिल्ली जाकर? कुत्ता होकर और तेरी ऐसी हिम्मत?

समझ गया था। वह कुत्ता तो बहुत दिन से रहता था, वह सब राज समझ गया था। उसने कहा कि आप देखते नहीं कि आपका वह जो विरोधी पहुंच गया है इस बार, वह कुत्तों से बेहतर है? बदतर है। नेता ने कहा कि बिलकुल ठीक। यह बात तो बिलकुल ठीक है। तू जा। तू दिल्ली जा। उसने कहा, रास्ता कुछ बता दें। मैं कैसे दिल्ली जाऊं!

तो रास्ता, नेता ने कहा कि सूत्र सरल है। जिस तरकीब से मैं जाता रहा, वही तरकीब तू भी उपयोग कर। क्योंकि वह अनुभव में लाई गई तरकीब है। तरकीब उसने बता दी कि जब अमीर कोई दिखाई पड़े, अमीर कुत्ता...

कुत्तों में भी अमीर और गरीब होते हैं। अमीर कुत्ता आपने देखा होगा; कार में भी चलता है; सुंदरतम स्त्रियों की गोद में भी बैठता है; शानदार गलीचों पर विश्राम भी करता है। आदमी को रोटी न मिले, उसको तो विशेष भोजन मिलता है। वह अमीर कुत्ता है।

तो उसने कहा, जब अमीर कोई कुत्ता दिखे, तो कहना कि सावधान। गरीब कुत्ते इकट्ठे हो रहे हैं; तुम्हारे लिए खतरा है। मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ। और जब कोई गरीब कुत्ता दिखे, तो फौरन कहना कि मर जाओगे। लूटे जा रहे हो। शोषण किया जा रहा है। लाल झंडा हाथ में लो। मैं तुम्हारा नेता हूँ। इन अमीरों को ठीक करना जरूरी है। और जब तक—जैसा कि अहमदाबाद की सड़कों पर मैंने दो-चार जगह लिखा देखा : जनता जागे, सेठिया भागे—उसने कहा होगा, कुत्ते जागे, सेठिया भागे। तैयार हो जाओ।

पर उस कुत्ते ने कहा कि महाराज, यह तो ठीक है। लेकिन अमीर और गरीब कुत्ते दोनों साथ मिल जाएं, तो मैं क्या करूँ? तो कहना, मैं सर्वोदयी हूँ! मैं सबके उदय में विश्वास करता हूँ। गरीब का भी उदय हो, अमीर का भी उदय हो। सूरज पूरब से भी निकले, पश्चिम से भी साथ निकले। हम सर्वोदयी हैं।

सूत्र पूरा हो गया। कुत्ते ने प्रचार शुरू कर दिया। और नेता ने कहा, ध्यान रखना, जोर से बोले चले जाना। कुत्ते ने कहा, यह तो अभ्यास है हमारा। इसमें कोई चिंता न करें। इसमें हम नेताओं को मात दे देते हैं। इसमें कोई दिक्कत नहीं है। हम चिल्लाते रहेंगे। नेता ने कहा, अगर चिल्लाते रहे, तो दिल्ली पहुंच जाओगे। बस, चिल्लाने में कुशलता चाहिए। इसकी फिक्र मत करना कि क्या चिल्ला रहे हो। जोर से चिल्ला रहे हो, इसका खयाल रखना। दूसरे को दबा देना चिल्लाने में, बस!

कुत्ते ने शुरू कर दिया काम। महीने पंद्रह दिन में उसने काशी के कुत्तों को राजी कर लिया। नेता से कहा कि अब मैं जाता हूँ। आप वहां खबर करवा दें दिल्ली में कि मैं आ रहा हूँ। ठहरने का इंतजाम, सब व्यवस्था करवा दें। कितनी देर

लगेगी, नेता ने पूछा, तेरे पहुंचने में? कुत्ते ने कहा कि कुत्ते की चाल से जाऊंगा; और सर्वोदयी कहकर फंस गया हूँ। तो वे कुत्ते कह रहे हैं, पैदल जाओ। झंझट हो गई। वे कहते हैं, सर्वोदयी, पैदल जाओ, पदयात्रा करो! फंस गया झंझट में; नहीं तो ट्रेन में निकल जाता। अब तो पैदल ही जाना पड़ेगा। कम से कम महीनाभर लग जाएगा।

खबर कर दी गई। दिल्ली के कुत्ते बड़े प्रसन्न हुए। काशी का कुत्ता आता है; धर्मतीर्थ से आता है। जरूर कुछ ज्ञान लेकर आता होगा! काम पड़ेगा। लेकिन बड़ी मुश्किल तो यह हुई कि एक महीने के बाद उन्होंने स्वागत का इंतजाम किया, द्वार-दरवाजे बनाए। लेकिन कुत्ता सात ही दिन में पहुंच गया। वे तो इंतजाम कर रहे थे एक महीने बाद का, कुत्ता सात दिन में दिल्ली पहुंच गया। बड़े चकित हुए। उन्होंने कहा, बिलकुल समझ नहीं तुम्हें। बेवक्त आ गए। हम सब इंतजाम किए थे। मेयर को राजी किए थे। फूलमाला पहनवाते। यह तुमने क्या किया! सब विरोधी पार्टी के नेताओं को इकट्ठा कर रहे थे कि फूलमाला पहनाते। तुम यह क्या किए? इतनी जल्दी आ गए बेवक्त। कोई तैयारी नहीं है।

उस कुत्ते ने कहा कि मैं क्या कर सकता हूँ? काशी से निकला; एक मिनट रुक नहीं सका कहीं। जिस गांव में पहुंचा, उसी गांव के कुत्ते इस बुरी तरह पीछे लग जाते कि मैं जान बचाकर गांव के बाहर होता। वे दूसरे गांव के बाहर तक जब तक मुझे छोड़ते, तब तक दूसरे गांव के कुत्ते मेरे पीछे लग जाते। मैं ठहरा ही नहीं, रुका ही नहीं, विश्राम नहीं किया। बस, भागता ही चला आ रहा हूँ। और कहते हैं, इतना ही कहकर वह कुत्ता मर गया, क्योंकि इतना थक गया था।

दिल्ली आमतौर से कब्र बनती है पहुंचने वालों की। बड़ी कब्र है। दौड़-दौड़कर किसी तरह पहुंचते हैं वहां; गिरकर मर जाते हैं। शायद मरने के लिए पहुंचते हैं या किसलिए पहुंचते

हैं, कुछ कहना कठिन है। मर गया वह कुत्ता। पर एक राज की बात बता गया कि ठहर नहीं पाया कहीं; दौड़ते ही रहे लोग।

हम भी एक-एक आदमी के मन को बचपन से दौड़ा रहे हैं। सब मिलकर दौड़ा रहे हैं। सब मिलकर दौड़ा रहे हैं। बाप दौड़ा रहा है कि नंबर एक आओ। मां दौड़ा रही है कि क्या कर रहे हो, बगल के पड़ोसी का लड़का देख रहे हो? स्पोर्ट्स में नंबर एक आ गया। मां-बाप किसी तरह पीछा छोड़ेंगे, तो एक पत्नी उपलब्ध होगी। वह कहेगी, दौड़ो। देखते हो, बगल का मकान बड़ा हो गया। बगल की पत्नी के पास हीरों की चूड़ियां आ गई। तुम देखते रहोगे ऐसे ही बैठे! दौड़ो। किसी तरह दौड़-दाड़कर और थोड़ी उम्र गुजारता है, तो बच्चे पैदा हो जाते हैं। वे कहते हैं कि क्या बाप मिले तुम भी! न घर में कार है, न टेलीविजन सेट है। कुछ भी नहीं है। बड़ी दीनता मालूम होती है। इनफीरिआरिटी कांप्लेक्स पैदा हो रहा है हममें, स्कूल जाते हैं तो। दौड़ो।

पूरी शिक्षा, पूरा समाज, पूरी व्यवस्था दौड़ने के एक ढांचे में ढली हुई है। दिल्ली पहुंचो। दौड़ो, चाहे जान चली जाए, कोई फिक्र नहीं। दौड़ते रहो। ठहरना भर मत।

अगर इतने सारे अभ्यास में आदमी का मन

*जब तक आपको कहीं
पहुंचने का राग है,
जब तक कुछ पाने
का राग है, तब तक
मन अचंचल नहीं हो
सकता, चंचल रहेगा।
इसमें मन का क्या
कमसूर है? आप राग
कर रहे हैं, मन दौड़
रहा है।*

ठहरने का स्थान नहीं पाता, किसी विश्रामगृह में नहीं रुक पाता, भागता ही चला जाता है; तो अगर अर्जुन एक दिन कह रहा है कृष्ण से कि यह मन बड़ा भागने वाला है, यह रुकता नहीं क्षणभर को, तो ठीक ही कह रहा है। हम सब का मन ऐसा है।

लेकिन कृष्ण कहते हैं, यह मन का ढंग सिर्फ एक संस्कारित व्यवस्था है। अभ्यास से इसे तोड़ा जा सकता है। अभ्यास से नई व्यवस्था दी जा सकती है। और वैराग्य से! क्यों? वैराग्य को क्यों जोड़ दिया? क्या अभ्यास काफी न था? अभ्यास की विधि बता देते कि इससे बदल जाओ।

वैराग्य इसलिए जोड़ दिया कि अगर वैराग्य न हो, तो आप विधियों का उपयोग न करेंगे। क्योंकि राग दौड़ाने की व्यवस्था है। राग के बिना कोई दौड़ता नहीं है। दिल्ली कोई ऐसे ही वैराग्य भाव से नहीं दौड़ता। राग, कुछ उपलब्धि की आकांक्षा, कुछ पाने का खयाल दौड़ाता है। कोई लक्ष्य, कोई राग दौड़ाता है।

तो राग चंचल होने का आधार है, तो वैराग्य विश्राम का आधार बनेगा। अभी हम सब राग में जीते हैं। हमारा पूरा समाज राग से भरा है। हमारी पूरी शिक्षा, समाज की व्यवस्था, परिवार, संबंध-सब राग पर खड़े हैं। इसलिए हम सब

दौड़ते हैं। राग बिना दौड़े नहीं फलित हो सकता। राग यानी दौड़।

चंचलता का बुनियादी आधार राग है। इसलिए ठहराव का बुनियादी आधार वैराग्य होगा।

तो वैराग्य की शर्त जरूरी है, नहीं तो आप ठहरने को राजी नहीं होंगे। आप कहेंगे, ठहरकर मर जाएंगे। पड़ोसी तो ठहरेगा नहीं वह तो दौड़ता रहेगा। आप मुझसे ही क्यों कहते हैं कि ठहर जाओ? अगर मैं ठहर गया, तो दूसरा तो ठहरेगा नहीं; वह पहुंच जाएगा!

जब तक आपको कहीं पहुंचने का राग है, जब तक कुछ पाने का राग है, तब तक मन अचंचल नहीं हो सकता, चंचल रहेगा। इसमें मन का क्या कसूर है? आप राग कर रहे हैं, मन दौड़ रहा है। मन आपकी आज्ञा मान रहा है।

इसलिए वैराग्य की शर्त पीछे जोड़ दी कि वैराग्य की भावना हो, तो फिर ऐसी विधियां हैं, जिनके अभ्यास से आदमी मन को विश्राम को पहुंचा सकता है।

संध्या हम वैराग्य के संबंध में और अभ्यास के संबंध में थोड़ी गहरी छान-बीन करेंगे। अभी तो पांच-सात मिनट के लिए सब राग छोड़कर, एक पांच-सात मिनट कीर्तन के वैराग्य में-क्योंकि

कीर्तन से फायदा होता है, लेकिन उसी को, जो फायदे की भाषा छोड़ देता है। कीर्तन तो वैराग्य के मन की दशा है। और कीर्तन एक अभ्यास भी है; एक अभ्यास मन को ठहरने का। शरीर नाचेगा। शब्द वाणी से निकलेंगे। और भीतर कोई बिलकुल ठहरा रहेगा।

कीर्तन कहीं ले जाएगा नहीं।

एक युवक मेरे पास आया था। वह पूछ रहा था, कीर्तन से फायदा क्या होगा? सोचते हैं आप, वह पूछता है, कीर्तन से फायदा क्या होगा?

फायदा! फायदे की भाषा में जो सोचता है, वह कीर्तन नहीं कर पाएगा। कीर्तन से फायदा होता है, लेकिन उसी को, जो फायदे की भाषा छोड़ देता है। कीर्तन तो वैराग्य के मन की दशा है। और कीर्तन एक अभ्यास भी है; एक अभ्यास मन को ठहरने का। शरीर नाचेगा। शब्द वाणी से निकलेंगे। और भीतर कोई बिलकुल ठहरा रहेगा। नाच के बीच कोई बिलकुल ठहरा रहेगा।

आप भी साथ दें। साथ देंगे, तो ही अनुभव हो पाएगा। और संकोच न करें, छोटे-से संकोच व्यर्थ ही बाधा डाल देते हैं। देखते हैं कि कहीं पड़ोस का आदमी क्या सोचने लगे! वह पहले ही से आपके बाबत बहुत अच्छा नहीं सोचता है। आप बिलकुल बेफिक्र रहें।

— ओशो

*गीता दर्शन, भाग तीन, सोलहवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)*

